सारनाथ
सामान्य परिचय

धार्मिक भारत के महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों में सारनाथ अपनी परंपरा तथा पुरातात्विक अवशेषों के कारण देश विदेशों से आए तीर्थ यात्रियों, पुराविदों, इतिहासकारों तथा कला प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। बुद्ध की धर्मचक्रप्रवर्तन स्थली होने के कारण बौद्ध मतावलंबी इसे अपने चार पवित्र स्थलों में से एक मानते है। इसी प्रकार जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयंशनाथ की तपस्थली तथा बाद में मृत्युस्थली होने के कारण जैन मतावलंबियों के लिए भी इस स्थल का अपना एक अलग महत्व है।

सारनाथ वाराणसी कैन्ट रेलवे स्टेशन से ८ किलोमीटर तथा वाराणसी से ६.४ किलोमीटर उत्तर की ओर अवस्थित है। वाराणसी से सारनाथ जाने के लिए पक्की सड़क है। सारनाथ में उत्तर-पूर्व रेलवे का एक छोटा सा स्टेशन भी है जो प्राचीन अवशेषों से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है। यात्रियों के ठहरने के लिए कई राजकीय तथा अन्य निवास उपलब्ध हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

सारनाथ से प्राप्त पुरावशेष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा स्थापित पुरातत्व संग्रहालय में प्रदर्शन हेतु रखे गए हैं जिन्हें दर्शक प्रातः ९ से सायं ५ बजे तक देख सकते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

सारनाथ में भगवान बुद्ध के द्वारा सबसे पहले अपने धर्म का उपदेश दिए जाने के कारण यह स्थल बौद्ध-धर्म के अनुयायियों के लिए एक पवित्र स्थल है। बौद्ध साहित्य में इसे ऋषिपतन तथा मृगदाव या मृगदाय कहा गया है। इन नामों के उत्पत्ति के विषय में महावस्तु से जानकारी मिलती है। इस स्थल को ऋषिपतन कहा जाता था क्योंकि पाँच सौ प्रत्येक बुद्ध अथवा ऋषियों के शरीर उनके निर्वाण प्राप्त करने के बाद यहाँ गिरे थे। मृगदाव या मृगदाय नाम उन मृगों के झुण्ड के कारण पड़ा जो यहाँ निर्भय घूमते रहते थे तथा जिन्हें वाराणसी के राजा ने बोधिसत्व नयग्रोधमृग की करूणा तथा आत्म-बलिदान से प्रभावित हो अभय दे रखा था। मध्यकालीन अभिलेखों में इसका उल्लेख धर्मचक्र अथवा सद्धर्मचक्र प्रवर्तन विहार के नाम से किया जाता है। इसका आधुनिक नाम सारनाथ संभवतः सारंगनाथ (मृगों के स्वामी) का परिवर्तित रूप है जिस नाम से प्रसिद्ध महादेव (शिव) का एक मंदिर पास ही अवस्थित है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

बोधगया में बुद्धत्व की प्राप्त के पश्चात बुद्ध ने सभी प्राणियों के कल्याण के लिए धर्म-प्रचार करने का निश्चय किया। ऐसा ज्ञात होने पर कि उनके पाँच पुराने सहयोगी सारनाथ में हैं, वे सारनाथ आ गए और उन्हें उसी स्थल पर सर्वप्रथम धर्म का उपदेश दिया था जो बौद्ध ग्रंथों में धर्मचक्र प्रवर्तन के नाम से जाना जाता है।

सारनाथ से प्राप्त एक परवर्ती कुषाणकालीन अभिलेख इस प्रथम धर्मोपदेश का आंशिक वर्णन करता है जिसके अनुसार बुद्ध ने इस स्थल पर दिए गए अपने प्रथम धर्मोपदेश में चार बातें बताई जिन्हें चार-आर्यसत्य (चत्वारि आर्य सत्यानि या आर्यसत्य चतुष्ट्म्) कहते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित प्रथम सत्य दुःख है। दुःख का कारण है यह दूसरासत्य है। प्रत्येक दुःख को रोका जा सकता है (दुःख निरोध) यह तीसरा सत्य है तथा चौथे आर्य सत्य के द्वारा उन्होंने दुःखों को रोकने के मार्ग (दुःख निरोध-गामिनी प्रतिपदा) से लोगों को अवगत कराया। दुःखों को रोकने वाले मार्ग को बुद्ध के मध्यम-मार्ग (मज्झिम पटिपदा) कहा हैं। इस मध्यम-मार्ग के आठ अंग (आर्य अष्टांगिक मार्ग) हैं।

१. सम्यक विचार
२. सम्यक आकांश
३. सम्यक वचन
४. सम्यक कर्म
५. सम्यक आजीविका
६. सम्यक प्रयत्न
७. सम्यक संकल्प तथा
८. सम्यक समाधि।

बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा कि जीवन के दो मार्ग हैं। इंद्रिय-सुख तथा सांसारिक सुखों के भोग का मार्ग जो दुःख के कारण है, तथा आत्मदमन तथा सुखों के परित्याग का मार्ग। उन्होंने इन दोनों का निषेध कर मध्यम मार्ग का निदेश किया

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

जो सुखमय जीवन व्यतीत करने का स्वर्णिम उपाय है। इस घटना के कारण सारनाथ सारे बौद्ध जगत के लिए ज्ञान के प्रकाश का एक अनूठा प्रतीक बन गया।

बुद्ध ने सारनाथ में भिक्षुओं के लिए एक संघ की स्थापना भी की। काशी के धनी गृहस्थ का पुत्र यश बुद्ध के उपदेश से प्रभावित हो अपने ५४ मित्रों के साथ उनका शिष्य हो गया था। बुद्ध ने पंचवर्गीय भिक्षु, यश और उसके स्वामी मित्रों को लेकर पहला संघ बनाया तथा धर्म प्रचार करने के लिए विभिन्न स्थानों में भेजा।

बुद्ध निर्वाण के लगभग दो सौ वर्ष बाद सम्राट अशोक (२७२-२३२ ई.पू.) हुए जिनका बौद्ध धर्म के इतिहास में अपना एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने कलिंग पर विजय प्राप्ति के लिए युद्ध घोष किया पर युद्ध में हुए जन-धन की क्षति देखकर उन्हें अत्यंत ग्लानि हुई और भविष्य में युद्ध-घोष न करने का उन्होंने निश्चय किया। क्रमशः उनका मन बुद्ध के उपदेशों की ओर आकर्षित हुआ और वे उनके अनुयायी बन गए। उन्होंने बुद्ध से संबंधित पवित्र स्थानों की यात्रा की। इसी क्रम में वे सारनाथ भी आए। यहाँ उन्होंने कई स्मारक बनवाए जिनमें से धर्मराजिका स्तूप (३०४ मी. ऊँचा) जिसके ऊपर एकाश्मीय वेदिका बनी थी तथा जिसे सन् १७८४ ई. में बनारस राज्य के जगत सिंह ने तोड़ दिया था। अशोक द्वारा निर्मित दूसरा महत्वपूर्ण स्मारक है एकाश्म-स्तंभ जिसके शीर्ष भाग पर सिंह की बड़ी ही आकर्षक आकृति लगाई गई थी। यह सिंह स्तंभ शीर्ष आज भारत का राज्यचिन्ह है। स्तंभ के शीर्ष भाग पर एक विशाल धर्म-चक्र भी था जिसके कई टुकड़े मिले हैं। ये सभी कलाकृतियों स्थल संग्रहालय में प्रदर्शित की गई हैं। एक अन्य स्मारक-धमेख स्तूप की स्थापना भी संभवतः इसी काल में हुई थी।

शुंग कालीन (द्वितीय-प्रथम शताब्दी ई.पू.) सारनाथ के धार्मिक या कला के क्षेत्र की गतिविधियों की अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है पर धर्मराजिका स्तूप के क्षेत्र के उत्खलनन से लगभग एक दर्शन वेदिका स्तंभ मिले हैं जिनका निर्माण काल लगभग प्रथम शताब्दी ई.पू. आंका गया है। ये स्तंभ संभवतः इसी काल में स्तूप की वेदिका या चारदीवारी में लगाए गए थे।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

उत्तर-भारत में कुषाणों के आगमन के साथ बौद्ध-धर्म ने धर्म तथा कला के क्षेत्र के एक नए युग में प्रवेश किया। मथुरा इस पुर्जागरण का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था किन्तु सारनाथ भी इस नई चेतना से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। नए स्मारक बने। सारनाथ में जहाँ बुद्ध का प्रातःकालीन भ्रमण का स्थान था वहाँ कनिष्क के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में मथुरा के भिक्षु बल ने लाल बालू-पत्थर से निर्मित एक विशालकालय बोधिसत्व प्रतिमा की स्थापना की जिसके ऊपर एक विशाल छत्र लगा हुआ था। मूर्ति के लेख में क्षत्रय वनष्पर और महाक्षत्रय खरवल्लान की सहायता का भी उल्लेख है जो संभवतः उस समय सारनाथ के शासक थे। इस काल में यहाँ सर्वास्तिवादिन संप्रदाय का वर्चस्व था जिन्होंने कुछ महाविहारों की स्थापना भी कराई थी।

गुप्तकाल (चतुर्थ-षष्ठ सदी) के प्रारंभ से सारनाथ ने कला के स्वर्णिम युग में प्रवेश किया। सारनाथ से प्राप्त मूर्तियों में सबसे सुंदर कृतियाँ इसी युग की देन हैं। इस काल की एक कृति जिसमें बुद्ध को धर्मचक्र मुद्रा में बैठे हुए दिखाया गया है, देश की सबसे भव्य मूर्तियों में से एक है। इसी काल में मुख्य मंदिर का विस्तार किया गया तथा धमेख स्तूप के बठिर्भाग में उत्कीर्ण-शिलापट्ट लगाए गए। धार्मिक क्षेत्र के रूप में सारनाथ की ख्याति दूर तक फैली। चीनी यात्री फा-हियान गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय (३७६-४१४ ई.) के कार्य काल में सारनाथ आया था और उसने यहाँ चार स्तूप और दो भिक्षु विहार देखे थे। एक बुद्ध मूर्ति पर उत्कीर्ण 'देय धर्मोयम कुमार गुप्तस्य' लेख से ज्ञात होता है कि वह मूर्ति गुप्त

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

सम्राट सुमार गुप्त (४१४-४५५ ई.) के दान से बनी थी। यद्यपि स्कन्द गुप्त के समय का कोई अभिलेख अभी तक सारनाथ से नहीं मिला है किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसके समय भी सारनाथ सतत रूप से उन्नत रहा। हूणों के आक्रमण के समय अवश्य ही इसे धक्का पहुँचा होगा। इस स्थल से कनिंधम को जिस अवस्था में एक मूर्ति-संग्रह प्राप्त हुआ था उससे पता चलता है कि इस नगर को हूणों के शेष का सामना करना पड़ा था। गुप्त वंश के परवर्ती राजाओं में कुमार गुप्त द्वितीय तथा बुद्ध गुप्त के अभिलेख यहाँ से मिले हैं जिनमें क्रमशः ४७३ तथा ४७६ तिथि दी गई है।

हर्षवर्धन के शासन काल में नए धार्मिक क्रिया-कलाप तथा सारनाथ में पूर्ववर्ती कला की संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया गया चीनी तीर्थ यात्रा युवान-चुवांड ने सारनाथ का विशद वर्णन किया है। उसके अनुसार यहाँ अशांक द्वारा निर्मित धर्मराजिका स्तूप तथा प्रस्तर-स्तंभ थे। प्रसत्र-स्तंभ २१-३३ मी. ऊँचा था तथा उसकी चमक दर्पण के सदृश थी। उसने यहाँ के संघाराम (महाविहार) का भी उल्लेख किया है जिसमें हीनयान संप्रदाय के सम्मितीय शाखा के १५०० बौद्ध भिक्षु रहते थें। मुख्य मंदिर (मूल गंध कुटी) ६५.३३ मीटर ऊँचा था जिसके गर्भगृह में धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में भगवान बुद्ध की मूर्ति स्थापित थी।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

सारनाथ का वैभव पाल शासकों के राज्यकाल तक अक्षुष्ण बना रहा किन्तु १०१७ ई. में जब वाराणसी को महमूद गजनी के आक्रमण से आघात पहुँचें तब सारनाथ के स्मारकों को भी हानि पहुँची। पाल वंश के शासक महिपाल के शासनकाल के १०२६ ई. के एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि स्थरपाल तथा वसन्तपाल नामक दो भाईयों ने धर्मराजिका स्तूप तथा धर्मचक्र का जीर्णोद्धार किया तथा उन्होंने एक नए प्रस्तर मंदिर (अष्टमहास्थानशैल-गन्धकुटी) की भी स्थापना की। सारनाथ से प्राप्त एक प्रतिमा-फलक, जिस पर बुद्ध के जीवन से संबंधित आठ दृश्यों का चित्रण है, संभवतः इसी मंदिर में लगा हुआ था। ग्यारहवीं सदी में कामचूरि राजा गांगंयदेव तथा गोड़े शासक महीपाल ने चिरकालिक युद्ध के फलस्वरूप सारनाथ गांगेयदेव के प्रभाव में आ गया। धमेख स्तूप के पूर्वी पार्श्व से प्राप्त ६ अभिलेख-खण्ड़ों से पता चलता है कि १०५८ ई. में महायान संप्रदाय के एक भिक्षु ने अष्टसाहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता पुस्तक की प्रतिलिपि करवाने के पश्चात् अन्य वस्तुओं के साथ सद्धर्मचक्र-प्रवर्तन महा विहार के भिक्षुओं को भेंट दी थी।

बारहवीं सदी में सारनाथ में निर्माण कार्य एक बार पुनः प्रारंभ हुआ। गहडवाल वंश के शासक गोविन्दचन्द्र देव (१११४-११५४ ई.) का शासन कन्नौज अयोध्या तथा काशी तक फैला था। उनका रानी कुमारदेवी की बौद्ध धर्म के प्रति गहरी निष्ठा थी। जिन्होंने यहाँ धर्म चक्र-जिन-विहार नामक महाविहार की स्थापना करवायी। इसके बाद सारनाथ की प्रतिष्ठा तथा वैभव का क्रमिक द्वारा प्रारंभ हो गया।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

आधुनिक संसार को सारनाथ का परिचय उस समय हुआ जब सन् १७९४ ई. में काशी के बाबू जगतसिंह ने जो राजा चेतसिंह के दीवान थे, इमारती समान की खोज में धर्मराजिका स्तूप को ही उधेड़ डाला और उसके माल-मसाले से जगत गंज मुहल्ला बनवाया। उस समय स्तूप के भीतर पत्थर की एक मंजूषा मिली थी जिसमें बुद्ध की धातुएँ (अस्थि अवशेष) थीं। उन्हें गंगाजी में बहा दिया गया। पत्थर का बक्सा इस समय कलकत्ते के संग्रहालय में है पर धातु-मंजूषा का कुछ पता नहीं. काशी के तत्कालीन अधिकारी श्री डंकन महोदय ने सन् १७९८ ई. में इस खुदाई का वर्णन लिखा जिससे लोगों का ध्यान सारनाथ के ध्वंसावशेषों की ओर गया। उसी के बाद कर्नल मैकेंजी ने भी खुदाई की थी। उससे प्राप्त कुछ मूर्तियाँ कलकत्ते स्थित भारतीय संग्रहालय को ले ज़ाई गईं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक कनिधम के समय इस पुरास्थल का उत्खनन हुआ। बाद में भी कई पुराविदों ने इस पुरास्थल पर उत्खनन कार्य किया जिससे अनेक महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रकाश में आया। आजकल यहाँ पर विभिन्न बौद्ध भिक्षु विभिन्न देशों से आकर रहते है। यहाँ पर कई बौद्ध मंदिर विभिन्न देशों द्वारा बनवाया गया है। प्रतिदिन यहाँ देश-विदेश से बौद्ध धर्म के श्रद्धालु पूजन दर्शन को आते है।

यहाँ पर दिगम्बर जैन मंदिर भी अवस्थित है। जैन धर्म के ११वें तीर्थकर के जन्म होने कारण यह स्थल जैन धर्म वालों के लिए भी अति पवित्र एवं दर्शनीय है।

तिब्बत मंदिर - १४७, २०७, २१८, २१९, २४२
जापानी मंदिर - १४९, २०८, २२०
चैना मंदिर - १४६, २०५
कोटियन मंदिर - २१०
थाईलैण्ड मंदिर - १४२, २१२
वर्मेश मंदिर - १४३, २१३
सारनाथ मंदिर - १९२
स्वामी नारायण - १९१, १४५
मंदिर
वग्र विद्या संस्थान - २०९

अनेक हिन्दू मंदिर भी सारनाथ में अवस्थित है जिनमें हिन्दू श्रद्धालु दर्शन-पूजन करते है एवं कई शिक्षण संस्थान भी सारनाथ में है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.